बेब डिड्रिकसन ज़ह्रियास

एक हरफ़नमौला खिलाड़ी

बेब डिड्रिकसन ज़हिरियास

एक हरफ़नमौला खिलाड़ी

डयूसे स्ट्रीट
बओमोंट, टेक्सास, 1919

बेब जितनी तेज़ दौड़ सकती उतने तेज़ दौड़ी.
उसकी माँ को स्टोर से कुछ सामान चाहिये था.
माँ के कहने पर स्टोर तक जाना
आठ वर्ष की बेब के लिए
एक महत्वपूर्ण कार्य होता था.
वह सारे रास्ते दौड़ती हुई जाती थी.

स्टोर पहुँच कर भी बेब रूकती नहीं थी.
वह भागते-भागते ही अपनी चीज़ों के
बारे में बताती थी.
स्टोर क्लर्क बेब को जानता था.
जो उसे चाहिये होता था,
क्लर्क उसकी ओर उछाल देता था.
इस तरह बेब को धीमा नहीं होना पड़ता था.
वह उछाले गये सामान को लपक लेती थी और
बिना रुके घर की ओर दौड़ पड़ती थी.

कई बार तो बेब सिर्फ भागती ही नहीं थी,
वह कूदती हुई जाती थी.
घरों के बीच लगी कंटीली बाड़ों के ऊपर से
कूद कर जाना उसे अच्छा लगता था.
अगली टाँग को वह मोड़ कर रखती थी
ताकि उसे खरोंचे न लग जाएँ.

एक पड़ोसी के घर की बाड़
अधिक ऊंची थी.
एक दिन बेब ने उस पड़ोसी से
निवेदन किया कि बाड़ को वह थोड़ा कटा दें.
पड़ोसी ने उसकी बात ध्यान से सुनी
और बाड़ काट कर छोटी कर दी.
अब तो बेब बिना रुकावट के
कूद सकती थी.

बेब का जन्म 1911 में हुआ था.
उसका असली नाम
मिल्ड्रेड एला डिड्रिकसन था.
लेकिन शायद ही कोई
उसे मिल्ड्रेड बुलाता था.
उसकी माँ उसे बेबी बुलाती थी.
पड़ोस के बच्चे कहते थे कि वह ‘बेब रुथ’
की तरह बेस-बाल को मार सकती थी.
बस तभी से हर कोई उसे बेब बुलाने लगा.

डिड्रिकसन परिवार में सात बच्चे थे.
परिवार इतना बड़ा था कि
व्यर्थ खर्च करने के लिए उनके पास
पैसे न होते थे.

बेब के पिता ने घर के पिछवाड़े में
एक जिम बना दिया था.
कूदने और लटकने के लिए लोहे की
छड़ें लगा दी थीं.
झाड़ू के डंडे से एक बारबेल बना दिया था.
बारबेल बेब के भाइयों के लिए था
पर बेब को इस बात की
ज़रा भी चिंता न थी.
वह जानती थी कि वह
किसी भी लड़के जितनी ताकतवर थी.
वह उतनी तेज़ दौड़ भी सकती थी.
दौड़ के मुकाबले में वह हमेशा लड़कों को
हरा देती थी.
हर बेस-बाल खेल के लिए उसे
सबसे पहले चुना जाता था.
जब लड़के फुटबाल खेलते थे
तो वह भी उनके साथ खेलती थी.

जब माँ उसे किसी काम पर भेजती तो
बेब स्ट्रीटकारों के साथ,
एक स्टॉप से दूसरे स्टॉप तक, रेस लगाती थी.
और वह सदा जीतने के लिए दौड़ती थी.
बेब सिर्फ एक खिलाड़ी न बनना चाहती थी,
वह तो संसार की अब तक की
सबसे महान खिलाड़ी बनना चाहती थी.

बेब को दौड़ना, कूदना, फेंकना ही
सबसे पसंद था.
वह हर बात को एक खेल बना लेती थी.
जब फर्श को रगड़ कर साफ़ करने की
उसकी बारी होती तो रगड़ने वाले ब्रुश
वह अपने पाँव पर बाँध लेती थी.
फिर फर्श पर साबुन का पानी डाल कर
उस पर स्केटिंग करती थी.
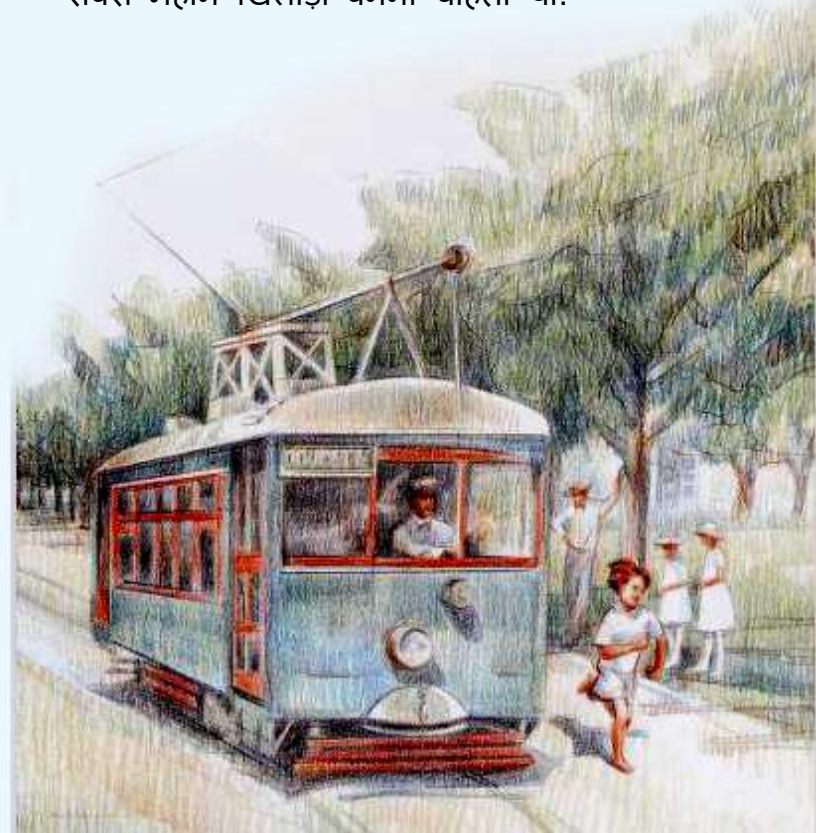
एक दिन उसके पिता ने अख़बार में कुछ
रोचक बातें पढ़ीं.
घटनायें 1928 की थीं.
एम्स्टर्डम, हॉलैंड में ओलंपिक मुकाबले
हो रहे थे.
पिता ने संसार भर के सबसे प्रसिद्ध
खिलाड़ियों के विषय में कहानियाँ
अख़बार से पढ़ कर अपने बच्चों को सुनायीं.
बेब ने भी यह बातें ध्यान से सुनी.
वह आश्चर्यचकित थी. उसका दिल
ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा था.
ओलंपिक खिलाड़ी वही कर रहे थे जो
वह स्वयं करना चाहती थी. और वह सब
मैडल जीत रहे थे!
बेब को लगा की यह दुनिया का
सबसे महान काम था. उसने
अपने परिवार को बताया की
एक दिन वह भी ओलंपिक खेलों में
भाग लेगी.
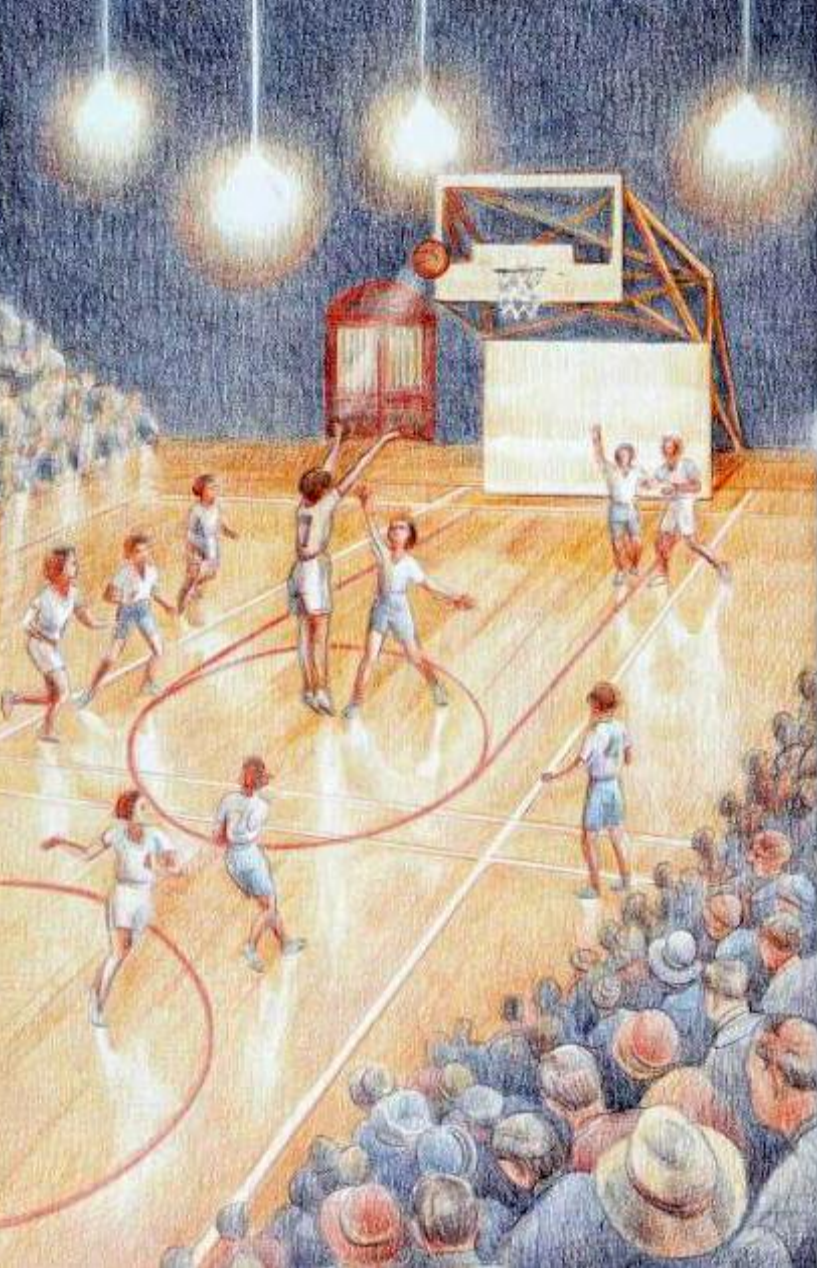
बओमोंट हाई स्कूल, 1928

“बेब! बेब!” दर्शक चिल्ला रहे थे.
बेब की टीम के एक साथी ने बॉल उसे दी.
सोलह वर्षीय बेब ने बॉल बास्केट की ओर
उछल दी. उसने एक अंक अर्जित किया.
लोगों ने तालियाँ बजाईं.
बओमोंट हाई स्कूल के लिए
बेब को अंक अर्जित करते हुए
उन लोगों ने कई बार देखा था.
वह बहुत ऊंची न थी.
लेकिन वह उनकी सबसे अच्छी खिलाड़ी थी.
एक खेल में वह अकसर
30 से 40 अंक अर्जित कर लेती थी.
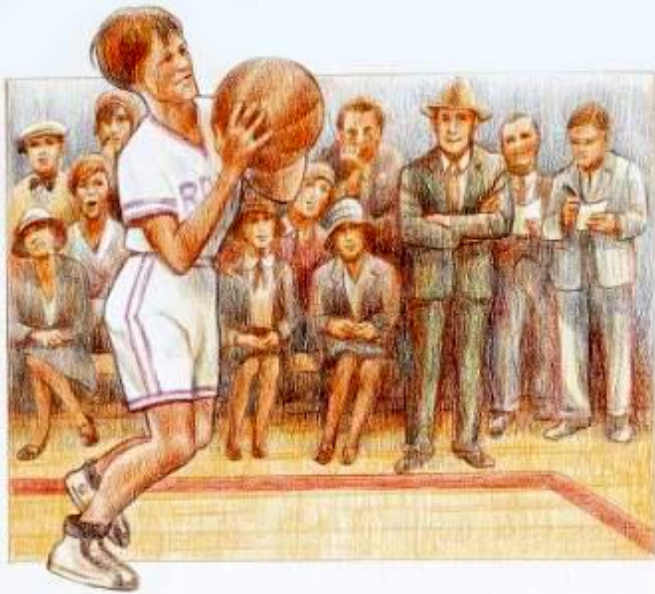
पत्रकार भी उस छात्रा के विषय में
लेख लिखने लगे जो एक प्रसिद्ध खिलाड़ी थी.
डैलस में कर्नल एम जे मेक्कोम्स ने
यह लेख पढ़े.
वह लड़कियों की बास्केट बॉल टीम,
जिसका नाम गोल्डन साईक्लोन्स था,
का प्रबंधन देखता था.
फरवरी 1930 में मेक्कोम्स ने बेब के समक्ष
उनकी टीम में सम्मिलित होने का
प्रस्ताव रखा.

बेब इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए
उतावली थी.
डैलस जाने के लिए उसे स्कूल छोड़ना पड़ सकता था.
लेकिन मेक्कोम्स ने सुझाव दिया कि
बास्केट बॉल का समय समाप्त होने के बाद
वह स्कूल की पढ़ाई पूरी कर सकती थी.
बेब के माता और पिता मान गये.
वह जानते थे कि एक अच्छी टीम में
खेलने के लिए बेब कितनी उतावली थी.

हाई स्कूल की शिक्षा पूरी करने के बाद
बेब फिर डैलस आ गयी.
कर्नल मेक्कोम्स की कंपनी में
उसे काम मिल गया.
दिन में वह टाइपिंग का काम करती
और काम समाप्त होने के बाद
बास्केट बॉल खेलती.

डैलस में अपनी पहली ही रात में बेब ने
साईक्लोन्स के लिए अपनी पहली गेम खेली.
जितने अंक टीम के अन्य खिलाड़ियों ने
अर्जित किये,
बेब ने अकेले ही उनसे अधिक अंक बना लिये.
उस वर्ष वह गोल्डन साईक्लोन्स की
सबसे उत्कृष्ट खिलाड़ी बन गयी.
उसे आल-अमेरिकन बास्केट बॉल
खिलाड़ी घोषित किया गया.
इसका अर्थ था कि वह देश की सबसे
उत्कृष्ट खिलाड़ियों में से एक थी.
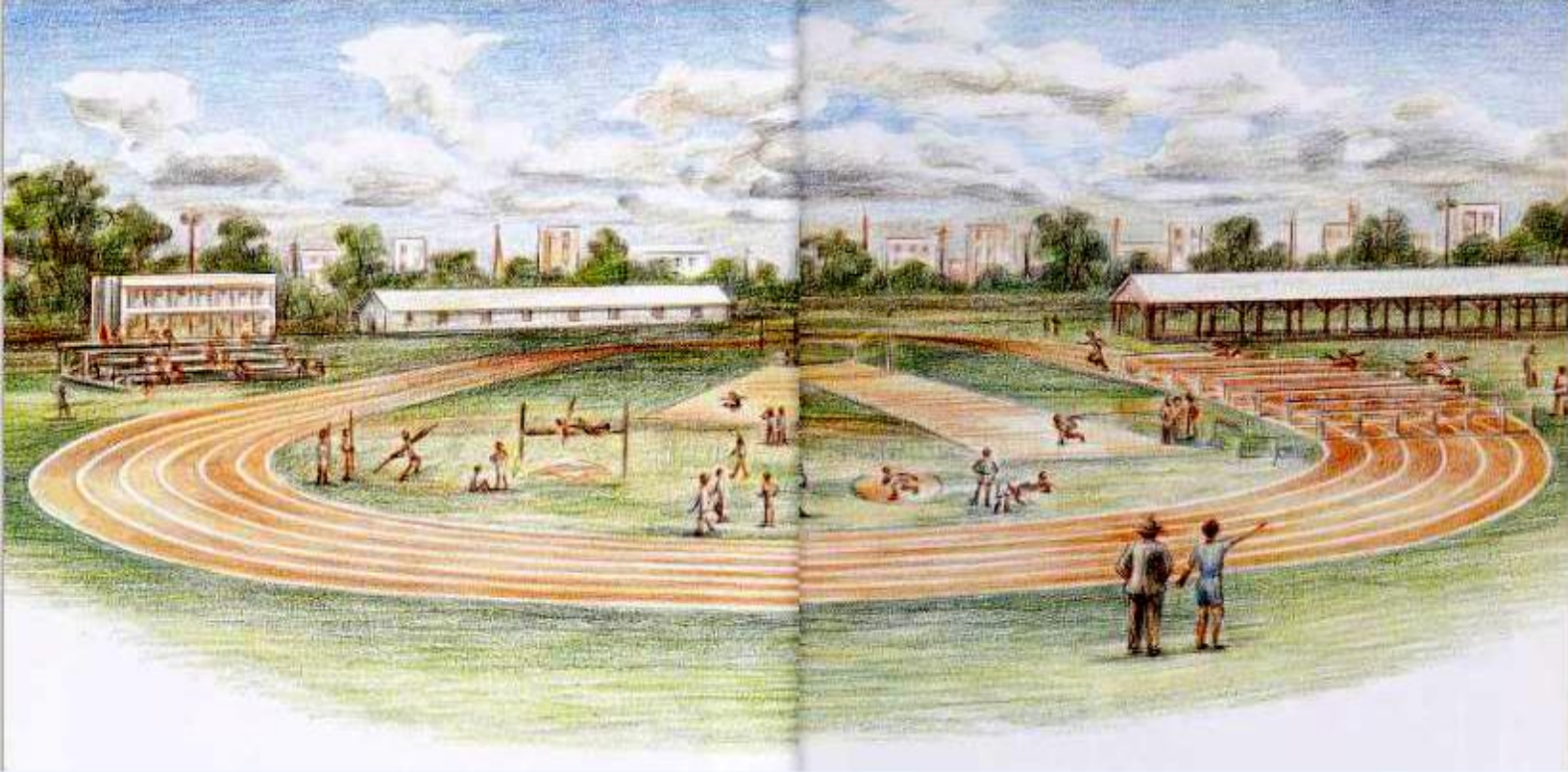
मेक्कोम्स चाहता था की बेब
अन्य खेल खेलने का भी प्रयास करे.
एक दिन वह उसे ट्रैक और फील्ड
खेलों की प्रतियोगिता दिखाने ले गया.

बेब ने ऐसी प्रतियोगिता अभी तक देखी न थी.
मेक्कोम्स ने उसे अलग-अलग खेलों के
विषय में बताया. बेब को
बाधा दौड़ सबसे रोचक लगी.
यह खेल देखकर उसे उन झाड़ियों की याद आई
जिन्हें वह अपने नगर में दौड़ कर
पार किया करती थी.

मेक्कोम्स ने गोल्डन साईक्लोन्स की
ट्रैक और फील्ड खेलों के लिए एक टीम बनाई.
अगली प्रतियोगिता कुछ दिनों बाद ही थी.
नई टीम के पास अभ्यास करने के लिए
अधिक समय न था.
अधिकतर लड़कियों ने सिर्फ
एक ही खेल में भाग लेने का निर्णय किया.
लेकिन बेब ने चार खेलों में
भाग लिया और चारों में जीती.

अपने प्रदर्शन में सुधार लाने के लिए
उन गर्मियों में बेब ने खूब अभ्यास किया.
जब उसकी टीम के साथी घर लौट जाते
तब भी वह देर तक अभ्यास करती रहती.
कभी-कभी तो वह रात में
चाँद के प्रकाश में भी अभ्यास करती.
और वह खेलों में विजय अर्जित करती रही.
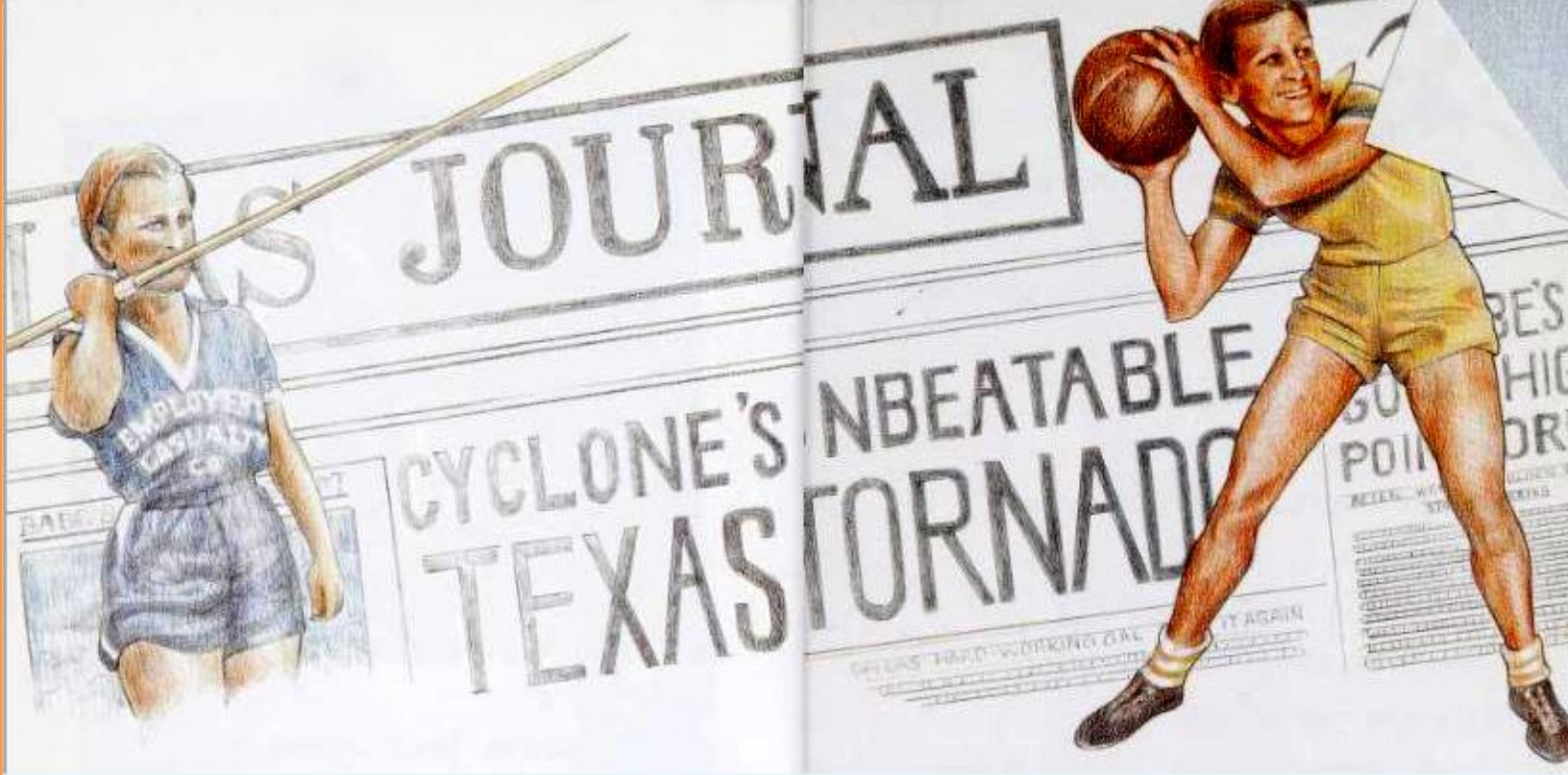
शीघ्र ही बेब ऊंची कूद, जेवलिन और
बेस-बाल में
नये कीर्तिमान स्थापित करने लगी.
समाचार-पत्र उसे
“टेक्सास टोर्नेडो” के नाम से बुलाने लगे.

उन गर्मियों में बेब ने हर प्रतियोगिता में
स्वर्ण पदक जीते.
वह बास्केट बॉल भी खेलती रही.
उसे 1931 और 1932 में
आल-अमेरिका का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी
घोषित किया गया.

वर्ष 1932 के आरम्भ में बेब फिर से
ओलंपिक खेलों के विषय में सोचने लगी थी.
ट्रैक और फील्ड खेलों की राष्ट्रीय प्रतियोगिता
निकट भविष्य में होने वाली थी.
प्रतियोगिता के विजेता उस वर्ष होने वाले
ओलंपिक में भाग ले सकते थे.
कर्नल मेक्कोम्स ने गोल्डन साईक्लोन्स का
प्रतिनिधित्व करने के लिए सिर्फ
बेब को चुना.
वह अकेली ही एक टीम थी.
उस प्रतियोगिता में दस खेल खेले जाने थे.
बेब ने आठ खेलों में भाग लेना था.
लेकिन वह घबराई हुई नहीं थी.
उसने बाद में बताया कि उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए
वह उस समय पूरी तरह तैयार थी.
वह उत्साहित थी और उसे लग रहा था कि
वह उड़ भी सकती थी.
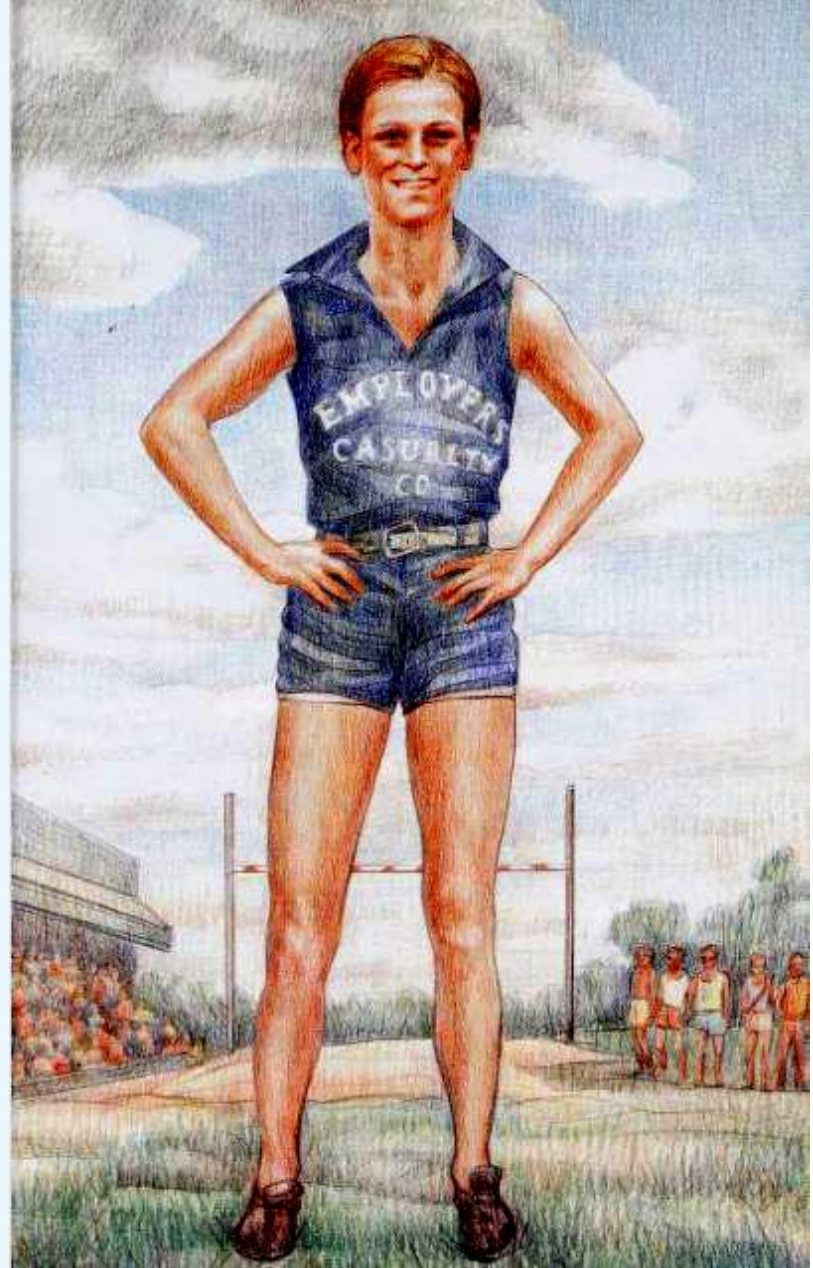
तीन घंटों तक वह एक प्रतियोगिता से
दूसरी तक सरपट दौड़ती जा रही थी.
कभी-कभी तो जजों को प्रतीक्षा करनी पड़ती थी
कि बेब थोड़ा विश्राम कर ले.
उसने शॉट-पुट में भी भाग लिया था.
लेकिन इस खेल का उसने अधिक अभ्यास न किया था.
पर वह चिंतित न थी. बेब जीत गयी
और उसने एक नया राष्ट्रीय कीर्तिमान
भी बनाया. तीन अन्य खेलों में
उसने पुराने विश्व रिकॉर्ड तोड़ कर
नये रिकॉर्ड बनाए.

उस दुपहर उसने आठ में से
पाँच खेलों में विजय अर्जित की.
एक अन्य खेल में उसका मुकाबला
बराबरी का रहा.
फिर हर टीम के अंक घोषित किये गये.
बेब, जो कि एक-महिला टीम थी, ने
गोल्डन साईक्लोन्स के लिए
चैंपियनशिप जीत ली थी.
जो वचन अपने परिवार को उसने दिया था
उसे पूरा किया.
अब इक्कीस वर्ष की आयु में वह
ओलंपिक खेलों में भाग लेने जा रही थी.
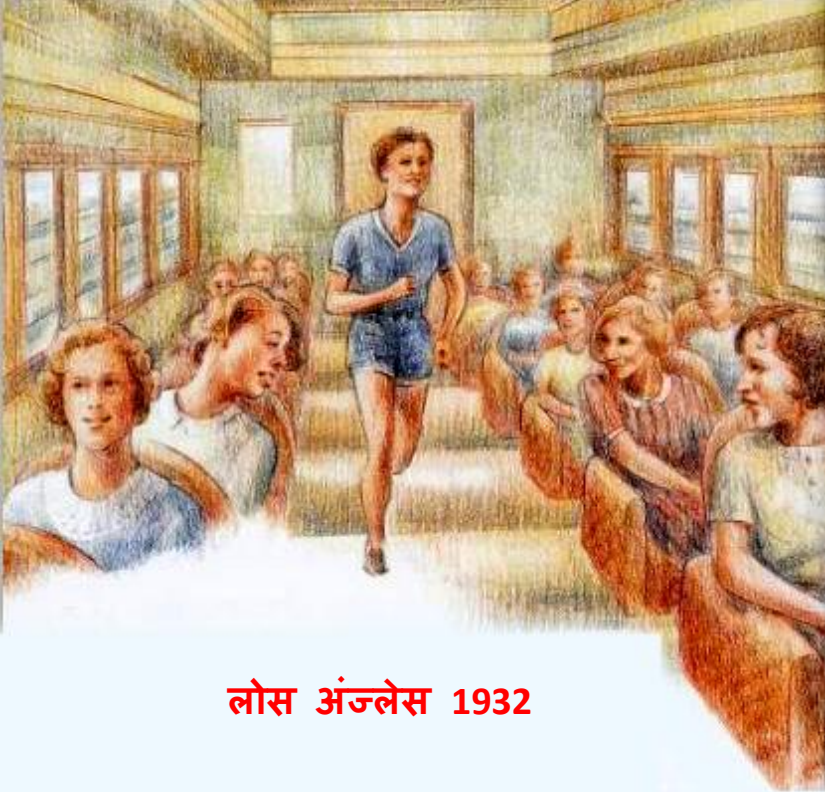
लोस अंज्लेस 1932

बेब और ओलंपिक के उसके साथी
लोस अंज्लेस जाने वाली ट्रेन पर
सवार हो गये.
वहीं पर 1932 के ओलंपिक खेल होने थे.
अन्य महिलायें या तो ताश खेल रही थीं
या गप्पें मार रही थीं.

लेकिन बेब ऐसा नहीं कर रही थी.
वह एक मिनट भी खोना नहीं चाहती थी.
सीटों के बीच जो गलियारा था
उस पर वह ट्रेन के एक छोर से
दूसरे छोर तक भागती रही.
उसे आता देखते ही यात्री चिल्लाते,
"वह फिर आ गयी!"

बेब जेवलिन, ऊंची कूद और अपनी मन-पसंद
बाधा दौड़ में भाग लेने वाली थी.
उसके नये कोच को
उसका बाधाएँ पार करने का तरीका
सही न लगा.

लोस अंज्लेस में पत्रकार उसके साथ
ऐसा व्यवहार कर रहे थे कि जैसे
वह एक फिल्म-स्टार थी.
पर वह यह कभी न भूली कि
वह वहां किस कारण आई हुई थी.
उसने कहा कि वह 'हर एक को हारने' आई थी.
कइयों को लगा कि वह डींग मार रही थी.
लेकिन जो उसे जानते थे वह समझ गये कि
बेब का व्यवहार पूरी तरह
स्वाभाविक था.

बाधा दौड़ में भाग लेने वाली
अधिकतर खिलाड़ी अपनी अगली टाँग
सीधी रखती थीं.
पतली बाधाओं को पार करने हेतु
यह तरीका अच्छा था. ले
किन बेब ने दो फुट चौड़ी झाड़ियों को
पार करते हुए बाधाओं को
पार करना सीखा था.
अब भी बाधाएं पार करते हुए
वह ऐसे कूदती थी कि जैसे अपने को
खरोंचों से बचा रही हो.

वह अपनी अगली टाँग को बहुत ऊपर
रखती थी और घुटने को थोड़ा मोड़ लेती थी.
कोच ने उसे कहा कि अपनी अगली टाँग
सीधी रखा करे.
लेकिन बेब ने तय किया कि
वह वही करेगी जो उसे
अपने लिए सही लगता था.
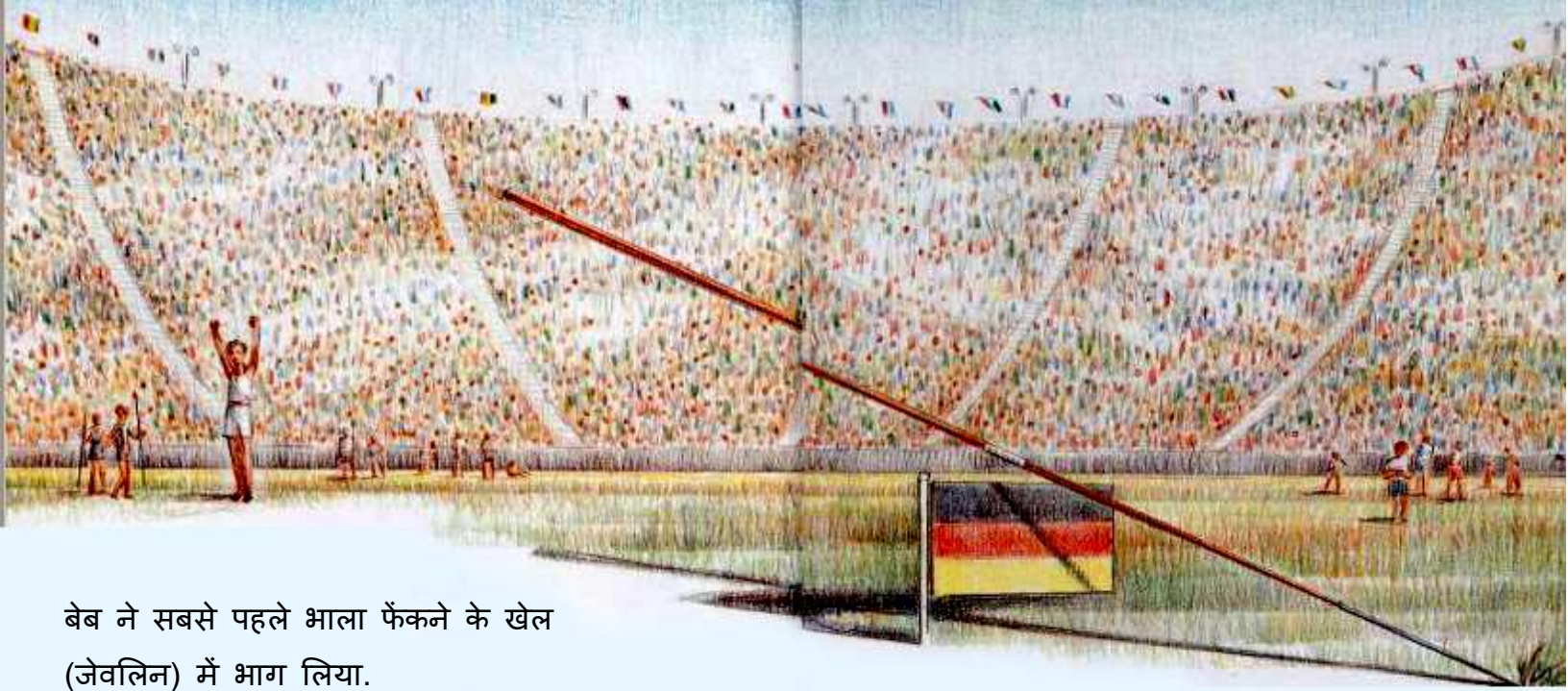
बेब ने सबसे पहले भाला फेंकने के खेल
(जेवलिन) में भाग लिया.
जजों ने पिछले रिकॉर्ड को अंकित करने के लिए
मैदान में एक झंडा लगा दिया.
बेब ने उसी झंडे पर अपने भाले का
निशाना साधा. जैसे ही उसने भाला फेंका,
उसका हाथ फिसल गया.
उसे अपने कंधे में चटकने की
एक आवाज़ सुनाई दी.
उसे चोट लगी थी.
क्या उसका प्रयास सफल हुआ था?

प्रयास आशा से अधिक सफल हुआ.
झंडे के ऊपर से उड़ता हुआ भाला
झंडे से आगे जाकर गिरा.
कोई अन्य खिलाड़ी उतनी दूर तक
भाला न फेंक पाई.
बेब ने नया विश्व रिकॉर्ड बना दिया था.
उसने अपना पहला ओलिंपिक स्वर्ण पदक
भी जीत लिया था.

बाधा दौड़ में एक और पदक जीतने का
अवसर बेब को कुछ दिन बाद मिलने वाला था.
यह बहुत ही करीबी मुकाबला था.
दौड़ शुरू करने में बेब थोड़ा पिछड़ गई.
पांचवीं बाधा तक वह पीछे ही रही.
लेकिन दौड़ की समाप्ति से थोड़ा पहले
वह सबसे आगे निकल गयी.

फिनिश लाइन पार करते समय वह
टीम के अन्य सदस्य से कुछ इंच ही आगे थी.
बेब ने अपना दूसरा स्वर्ण पदक जीता था
और एक और विश्व रिकॉर्ड बना दिया था.
उस दौड़ के एक चित्र में बेब की
अगली टाँग मुड़ी हुई दिखाई देती है.
चित्र देख कर लगता था कि
जैसे वह बओमोंट की झाड़ियाँ कूद कर
पार कर रही थी.
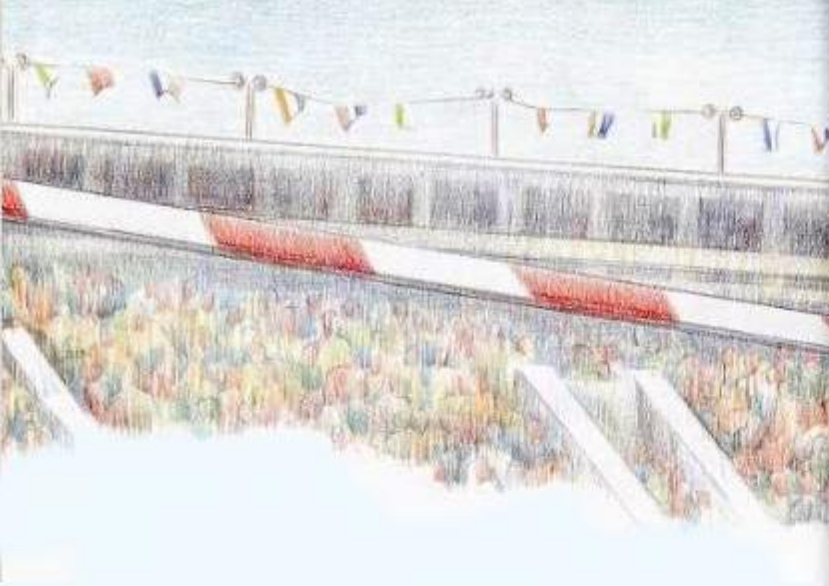
ऊंची कूद में बेब को रजत पदक से ही
संतोष करना पड़ा.
बेब और उसकी टीम की एक खिलाड़ी ने
नये रिकॉर्ड बनाए थे.
बाद में जजों का निर्णय था कि
बेब की सबसे ऊंची कूद असल में
एक डुबकी जैसी थी क्योंकि
उसके सिर ने बाधा को पहले पार किया,
पाँव बाद में पार हुए.
ऐसा करना नियमों के विरुद्ध था.

दूसरा स्थान पाकर बेब
बिलकुल प्रसन्न नहीं थी.
परन्तु तीन मैडल जीतने के कारण
सारे देश में उसकी चर्चा होने लगी थी.
बेब ने अपने सपने को सच कर दिया था.
वह एक महान ओलंपिक खिलाड़ी
बन गयी थी.

ओलंपिक खेलों की समाप्ति पर
बेब के सम्मान में डैलस में एक परेड निकाली गयी.
बेब और उसका परिवार फूलों से सजी
एक कार में सवार थे.
उसने हाथ हिला कर जय-जयकार करती
भीड़ का अभिवादन किया.
हालाँकि गर्मी का दिन था
फिर भी उसके रोयें खड़े हो गये थे.
सबसे रोमांचकारी थीं देश भर के अख़बारों की सुर्खियाँ.
अखबारों ने लिखा था की बेब
“संसार की सबसे महान खिलाड़ी” थी.

बाद में

बेब ने जब ऊंची कूद में रजत पदक जीता तो खेल-लेखक ग्रांटलैंड राइस ने उसे अगले दिन गोल्फ खेलने के लिए आमंत्रित किया. वह गोल्फ खेलने गयी और उसने तय किया कि वह एक चैंपियन गोल्फर बनेगी.
बेब गोल्फ का अभ्यास उसी लगन के साथ करने लगी जिस लगन के साथ उसने ट्रैक और फील्ड के खेलों का अभ्यास किया था.

सन 1934 तक वह गोल्फ की प्रतियोगिताओं में भाग लेने लगी थी. 1935 में वह गोल्फ के टूर्नामेंट जीतने लगी थी. एक समय, एक के बाद एक, 17 बड़ी प्रतियोगितायें उसने जीतीं. एक बार गोल्फ के मैदान में उसकी मुलाकात एक पेशेवर पहलवान जॉर्ज ज़ह्रियास से हुई. उन्होंने 1938 में विवाह कर लिया.
बेब डिड्रिकसन ज़ह्रियास महिला खिलाड़ियों के लिए एक मार्ग-दर्शक और रोल मॉडल थी. महिलाओं की गोल्फ एसोसिएशन बनाने में उसने अपना योगदान दिया.
एसोसिएटेड प्रेस ने उसे छह बार ‘वर्ष की उत्कृष्ट महिला खिलाड़ी’ घोषित किया था और 1950 में उसे ‘अर्ध-शताब्दी की उत्कृष्ट महिला खिलाड़ी’ घोषित किया गया था. बेब सच में इस संसार के सबसे महान खिलाड़ियों में से एक थी.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1911- 26 जून के दिन मिल्ड्रेड एला "बेब" डिड्रिकसन का जन्म पोर्ट आर्थर, टेक्सास में हुआ.

1917- डिड्रिकसन परिवार बओमोंट, टेक्सास आ गया.

1930- डैलस, टेक्सास आकर गोल्डन साईक्लोन्स सम्मिलित हो गयी.

1932- राष्ट्रीय ट्रैक और फील्ड चैंपियनशिप में जीत पाई.

1932- ओलिंपिक खेलों में दो स्वर्ण और एक रजत पदक जीता, तीन विश्व रिकॉर्ड बनाए.

1934- गोल्फ टूर्नामेंट में पहली बार भाग लिया.

1935- टेक्सास में महिलाओं का गोल्फ टूर्नामेंट जीता.

1938- जॉर्ज ज़ह्रियास के साथ विवाह.

1946-47- एक के बाद एक, 17 गोल्फ टूर्नामेंट जीते.

1950- 'अर्ध-शताब्दी की उत्कृष्ट महिला खिलाड़ी' घोषित.

1955- अपनी आत्मकथा, 'थिस लाइफ आई हैव लिव्ड' प्रकाशित.

1956- 27 सितम्बर को 45 वर्ष की आयु में टेक्सास में कैंसर से मृत्यु.